ध्रुवदेव शर्मा
सहायक शिक्षा अधिकारी

18/9/87.

अ0शा0पत्र सं0 1-6/86 वि.ग.नि

भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)
(शिक्षा विभाग)
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली-110066
दिनांक 18 अगस्त 1987.

मान्यवर,

आपको संभवत: विदित होगा कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग पिछले 25 वर्षों से पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण एवं विश्वविद्यालय स्तर के मानक ग्रंथों की रचना एवं प्रकाशन का कार्य करता आ रहा है। विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा-माध्यम के रूप में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठापित करने के लिए सभी संभव उपाय करना शब्दावली आयोग के कार्यक्षेत्र में है।

इस प्रश्न पर देश के जाने-माने शिक्षाविदों के विचार जानने और भारतीय भाषाओं में उच्चस्तरीय ग्रंथ-निर्माण की प्रगति का जायज़ा लेने के लिए नवम्बर, 1983 में "शिक्षा माध्यम और भारतीय भाषाएं" विषय पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया था जिसका उद्घाटन तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने किया था। उक्त अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में सभी भारतीय भाषाओं में माध्यम परिवर्तन के लिए अब तक की तैयारियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया और सर्वसम्मति से यह विचार व्यक्त किया गया कि जहां तक शब्दावली और ग्रंथ-निर्माण का प्रश्न है, सभी विषयों की उच्च से उच्च शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से देने की शुरुआत की जा सकती है। हाँ, यह जरूर है कि हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की पूरक अध्ययन और संदर्भ सामग्री संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उच्च स्तर की पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की जानी चाहिए ताकि उन्हें अपने-अपने विषय की अद्यतन जानकारी रहे और वे किसी भी रूप में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में असुविधा अनुभव न करें।

इसी सिफारिश को ध्यान में रखते हुए, शब्दावली आयोग ने दो त्रैमासिक पत्रिकाओं के प्रकाशन की योजना आरम्भ की है। एक पत्रिका "विज्ञान गरिमा सिंधु" विज्ञान विषयों से संबंधित होगी और दूसरी "ज्ञान गरिमा सिंधु" सामाजिक

....2

संबंधित होगी

विज्ञानों से। इन पत्रिकाओं में विविध विषयों की ऐसी सामग्री देने का प्रयास किया जाएगा जो छात्रों को पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध नहीं है और जिसके लिए उनहें अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकाओं का आश्रय लेना अपरिहार्य है। प्रस्तावित पत्रिकाओं में यह सामग्री इतनी रुचिकर शैली में देने का विचार है कि छात्रों के अलावा अन्य सुधी पाठक भी इनहें पढ़कर अपना ज्ञानवर्धन कर सकें।

इन पत्रिकाओं में हम यथासंभव मौलिक लेख ही देना चाहते हैं ताकि विषयानुकूल गम्भीर होते हुए भी सरल से सरल भाषा में विचार व्यक्त करने की एक मौलिक शैली का विकास हो सके। साथ-ही, इन लेखों में शब्दावली आयोग द्वारा अनुमोदित पारिभाषिक शब्दावली का ही यथासंभव प्रयोग किया जाएगा।

आपने अपने विषय के मूर्धन्य विद्वान हैं। अतः हमें आशा है कि हमें अपने इस प्रयास में आपसे पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त होगा। निवेदन है कि हमें सामयिकमहत्व के किसी विषय पर एक मौलिक लेख भेजने की कृपा करें। यदि कहीं आपको पारिभाषिक शब्दावली संबंधी कठिनाई अनुभव हो तो आप अंग्रेजी के शब्द का प्रयोग कर सकते है। शब्दावली आयोग इसके स्थान पर उचित हिंदी पर्याय रख लेगा। लेख की भाषा यथासंभव सरल रखें। लेख सामान्यतः 8-10 पृष्ठों से अधिक न हो। इनमें आप जहां आवश्यक हो, चित्रों, ग्राफों आदि का समावेश कर सकते हैं जिनका आप प्रारूप दे दें, आर्ट-वर्क शब्दावली आयोग में करा लिया जाएगा। लेखों के लिए यथेष्ट पारिश्रमिक दिए जाने की व्यवस्था है जिसकी राशि 200/- रुपए तक हो सकती है कृपया अपना लेख दो सप्ताह में अवश्य भेज दें।

हमें आपके अनुकूल उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय

ध्रुवदेव शर्मा

डॉ. कृष्ण बहादुर
अध्यक्ष, रसायन विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद (उ० प्र०)

फा०सं० ---1-6/86 वि.ग.सिं.--

धुवदेव शर्मा
सहायक शिक्षा
अधिकारी

भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-66 दि० 17 सितम्बर '87

महोदय,

आपने ---"विज्ञान गरिमा सिंधु"------------------- के लिए मानव का अस्तित्व और होमो फ्यूचरस की उत्पत्ति के लिए उसका आवश्यक आचरण शीर्षक का जो लेख भेजा था, वह इस कार्यालय में प्राप्त हो चुका है। संपादन समिति में विचार-विमर्श के पश्चात इसे पत्रिका में शामिल करने की कार्रवाई की जाएगी।

आपसे अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी समय समय पर अपने लेख भेजकर सहयोग प्रदान करते रहें।

आपका,

(हस्ताक्षर)

(धुव देव शर्मा)

प्रो॰ कृष्ण बहादुर
68, दिलकुशा
न्यू कटरा
इलाहाबाद (उ॰प्र॰)
211002.

पत्र सं0 ---1-6/86---वि.ग.सिं.

ध्रुवदेव शर्मा
सहायक शिक्षा
अधिकारी

भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-66 दि0 21-7-87

महोदय,

आपने -----"विज्ञान गरिमा सिंधु"---------------- के लिए
---जीव उत्पत्ति: युत प्रभाव और स्वयं संगठित तंत्रों का ऊर्जा प्रवाह---
शीर्षक का जो लेख भेजा था, वह इस कार्यालय में प्राप्त हो चुका है। संपादन समिति में विचार-विमर्श के पश्चात इसे पत्रिका में शामिल करने की कार्रवाई की जाएगी।

आपसे अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी समय समय पर अपने लेख भेजकर सहयोग प्रदान करते रहें।

आपका,

(ध्रुव देव शर्मा)

प्रो. कृष्ण बहादुर
68, दिलकुशा
न्यू कटरा
इलाहाबाद-211002

ध्रुवदेव शर्मा
सहायक शिक्षा अधिकारी

अ०शा०पत्र सं० 1-6/86 वि.ग.सिं.
भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)
(शिक्षा विभाग)
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली-110066
दिनांक 2-6-1987.

Article sent on 13/6/87

मान्यवर,

आपको संभवत: विदित होगा कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग पिछले 25 वर्षों से पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण एवं विश्वविद्यालय स्तर के मानक ग्रंथों की रचना एवं प्रकाशन का कार्य करता आ रहा है। विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा-माध्यम के रूप में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठापित करने के लिए सभी संभव उपाय करना शब्दावली आयोग के कार्यक्षेत्र में है।

इस प्रश्न पर देश के जाने-माने शिक्षाविदों के विचार जानने और भारतीय भाषाओं में उच्चस्तरीय ग्रंथ-निर्माण की प्रगति का जायजा लेने के लिए नवम्बर, 1983 में "शिक्षा माध्यम और भारतीय भाषाएं" विषय पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया था जिसका उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने किया था। उक्त अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में सभी भारतीय भाषाओं में माध्यम परिवर्तन के लिए अब तक की तैयारियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया और सर्वसम्मति से यह विचार व्यक्त किया गया कि जहां तक शब्दावली और ग्रंथ-निर्माण का प्रश्न है, सभी विषयों की उच्च से उच्च शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से देने की शुरुआत की जा सकती है। हाँ, यह जरूर है कि हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की पूरक अध्ययन और संदर्भ सामग्री संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उच्च स्तर की पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित की जानी चाहिए ताकि उन्हें अपने-अपने विषय की अद्यतन जानकारी रहे और वे किसी भी रूप में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में असुविधा अनुभव न करें।

इसी सिफारिश को ध्यान में रखते हुए, शब्दावली आयोग ने दो त्रैमासिक पत्रिकाओं के प्रकाशन की योजना आरम्भ की है। एक पत्रिका "विज्ञान गरिमा सिंधु" विज्ञान विषयों से संबंधित ~~होगी~~ और दूसरी "ज्ञान गरिमा सिंधु" सामाजिक

....2

विज्ञानों में । इन पत्रिकाओं में विविध विषयों की ऐसी सामग्री देने का प्रयास किया जाएगा जो छात्रों को पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध नहीं है और जिसके लिए उन्हें अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकाओं का आश्रय लेना अपरिहार्य है । प्रस्तावित पत्रिकाओं में यह सामग्री इतनी रुचिकर शैली में देने का विचार है कि छात्रों के अलावा अन्य सुधी पाठक भी इन्हें पढ़कर अपना ज्ञानवर्धन कर सकें । इस शृंखला में "विज्ञान गरिमा सिंधु" का प्रकाशन प्रारंभ हो चुका है। इसका दूसरा अंक मुद्रणाधीन है।

इन पत्रिकाओं में हम यथासंभव मौलिक लेख ही देना चाहते हैं ताकि विषयानुकूल गम्भीर होते हुए भी सरल से सरल भाषा में विचार व्यक्त करने की एक मौलिक शैली का विकास हो सके । साथ ही, इन लेखों में शब्दावली आयोग द्वारा अनुमोदित पारिभाषिक शब्दावली का ही यथासंभव प्रयोग किया जाएगा ।

आपन अपने विषय के मूर्धन्य विद्वान हैं । अतः हमें आशा है कि हमें अपने इस प्रयास में आपसे पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त होगा । निवेदन है कि हमें सामयिकमहत्त्व के किसी विषय पर एक मौलिक लेख भेजने की कृपा करें । यदि कहीं आपको पारिभाषिक शब्दावली संबंधी कठिनाई अनुभव हो तो आप अंग्रेजी के शब्द का प्रयोग कर सकते है । शब्दावली आयोग इसके स्थान पर उचित हिंदी पर्याय रख लेगा । लेख की भाषा यथासंभव सरल रखें । लेख सामान्यतः 8-10 पृष्ठों से अधिक न हो। इनमें आप जहां आवश्यक हो, चित्रों, ग्राफों आदि का समावेश कर सकते हैं जिनका आप प्रारूप दे दें, आर्ट-वर्क शब्दावली आयोग में करा लिया जाएगा । लेखों के लिए यथेष्ट पारिश्रमिक दिए जाने की व्यवस्था है जिसकी राशि 200/- रुपए तक हो सकती है। कृपया अपना लेख दो सप्ताह में अवश्य भेज दें ।

हमें आपके अनुकूल उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी ।

भवदीय,

ध्रुवदेव शर्मा

डा० कृष्ण बहादुर
अध्यक्ष, रसायन विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
(उ० प्र०)